International Journal of Information Movement Vol.I Issue III (July2016)
www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 122-124

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में बस्तों का बढ़ता बोझ एवं स्वास्थ्यः एक अध्ययन

राम सरूप
शोधार्थी, पीएच.डी. शिक्षाशास्त्र
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

प्रस्तावनाः

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के जन्मदाता जर्मनी के विख्यात् शिक्षा शास्त्री फावेल को माना जाता है। इन्होंने सन् 1837 में जर्मनी के ब्लेकनवर्ग नामक ग्राम में प्रथम पूर्व प्राथमिक विद्यालय का अथवा बालोद्यान की स्थापना की थी। इन्होंने पूर्व प्राथमिक शिक्षा को यह नाम बच्चों के गुणों के आधार पर रखने का सोचा। एक छोटा बच्चा मां की गोद से उठकर एक संस्था में शिक्षिका रूपी मां की गोद मे आता है। ऐसे में यदि उस पर प्यार–दुलार एवं खेलों को छोड़कर पुस्तकों का बोझ डाला जाता है, तो उसे विद्यालय में थकान महसूस होने लगी है। अतः आवश्यक है कि ऐसे समय में विद्यालय में भी उसे लाड़ दुलार दिया जाए और उसके अन्दर जन्म से प्राप्त गुणों को बाहर निकालने का प्रयास किया जाए।

प्राचीन समय में शिक्षा की व्यवस्था मौलिक थी। बच्चों को गुरूकुलों में गुरू के द्वारा समस्त ज्ञान का विकास मौखिक पद्धति से किया जाता था, क्योंकि पहले शिक्षा का उददेश्य छात्र का नैतिक विकास करना था। शिक्षा का स्वरूप उदारवादी था। किन्तु बढ़ते आधुनिक परिवेश में बच्चों को आधुनिक बनाने की होड़ में उनकी उम्र और बचपन हम स्वयं भूलने लगे। आज प्रत्येक अभिभावक की चाह है कि उसका बच्चा सर्वश्रेष्ठ रहे। जिसके लिए प्रत्येक माता–पिता अच्छे–अच्छे विद्यालयों में नामांकन कराते हैं और अतिरिक्त शिक्षा हाबी क्लासेस के रूप में दी जाती है। इसमें छात्र का नैतिक विकास कुछ हद तक हो सकता है, किन्तु शारीरिक विकास नही हो पा रहा है। छात्र पुस्तकों के बोझ तले दबते जा रहे हैं। छोटे–छोटे हाथ दिनभर पेंसिल पकड़कर लिखते रहते हैं। तरह तरह का गृहकार्य घर पर करने के लिए दिया जाता है, जिससे छात्र मानसिक रूप से भी थकावट महसूस करने लगता है। इन सबका प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर दिखाई पड़ता है। साथ ही समाज से दूर रहने के कारण एकांकी रहने की आदते भी पड़ जाती है। ऐसे में हम बच्चों से जो चाहते हैं, वह पूर्ण नही हो पाता। इसलिए छात्र में भी कुण्ठा का जन्म होने लगता है। इन सभी समस्याओं से बचने के लिए हमारे शिक्षा विदों एवं बाल मनोवैज्ञानिकों ने भी समय समय पर आवश्यक शिक्षण विधियों का अविष्कार किया है। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री रूसों ने तो हमेशा ही शिक्षा में स्वतंत्रता को महत्व दिया है।

प्रारम्भिक बाल कला के दौरान तेजी से हो रहे भौतिक तथा मानसिक विकास के महत्व को समझते हुए प्रारम्भिक बाल देखरेख शिक्षा के कई कार्यक्रमों को विशेषकर बच्चों के लिए राष्ट्रीय नीति 1974 के पश्चात् शुरू किया गया, जिससे निम्नलिखित कार्यक्रम शामिल हैं :

1. समेकित बाल विकास योजना,
2. प्रारंभिक बाल देखरेख शिक्षा केन्द्रों के आयोजित करने के लिए स्वैच्छिक संगठनों की सहायता की योजना।
3. सरकारी सहायता से स्वैच्छिक एजेंसियों द्वारा चलाई जा रही बालबाड़ी और दिवा देखरेख केन्द्र।
4. प्राईमरी स्वास्थ्य केन्द्रों तथा उपकेन्द्र तथा अन्य एजेंसियों के माध्यम से मातृत्व तथा बाल स्वास्थ्य सेवाएं।

19वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में कुमारी मारगेरेट मैकमिलन ने शिशु शालाओं का आयोजन किया। बीसवीं शताब्दी में इटली में डॉ॰ मेरिया मान्टेसरी जी ने मान्टेसरी स्कूलों की स्थापना की, जिसमें 2–6 वर्ष तक समस्त बच्चों को विभिन्न उपकरणों की सहायता से शिक्षा की व्यवस्था की। उनके भारत आगमन के बाद से ही इस प्रकार की शिक्षा देने की व्यवस्था भारत में भी की जाने लगी। इस समय समेकित बाल विकास योजना प्रारम्भिक बाल विकास का सबसे बड़ा कार्यक्रम है। जिसके अन्तर्गत लगभग 2.90 लाख आंगनबाड़ियों लगभग 140 बच्चों एवं लगभग 27 लाख माताओं की सेवाएं कर रही हैं। 1992 की कार्ययोजना में प्रारम्भिक बाल शिक्षा केन्द्र में सुधार किये गये और बच्चों के लिए पोषण आहार एवं उनके लिए शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था का प्रावधान किया गया। कोठारी कमीशन ने भी पूर्व प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम के बिषय में लिखा है कि ''हम पूर्व प्राथमिक विद्यालयों के लिए पाठ्क्रम की मुश्किल से ही बात कर सकते है, इसको कियाकलाप कार्यक्रम समझना ही अधिक उचित है।''

कोठारी कमीशन के कथन के आधार पर ही केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकारों द्वारा पूर्व प्राथमिक विद्यालयों के लिए कोई पाठयक्रम या कार्यक्रम निर्धारित नहीं किया और बच्चों को सामान्यतया गीत, सामूहिक, व्यायाम एवं रचनात्मक कार्यो की शिक्षा दी जाती है। बच्चों के सर्वागीर्ण विकास को ध्यान में रखकर ''कोठारी कमीशन'' ने ''शिशु सुरक्षा समिति'' द्वारा प्रस्तावित की जाने वाली कियाओं के कई कार्यक्रम का अनुमोदन किया है :

1. स्वतंत्र खेल घर के अन्दर और बाहर कराए जाएं।
2. विभिन्न अंगों और मांसपेशियों का संचालन करने वाली शारीरिक क्रिया है।
3. संगठित एवं निर्देशित खेल और सामुहिक क्रियाएं।
4. सरल व्यायाम नृत्य और लययुक्त खेलों को शाामिल करते हुए शारीरिक प्रशिक्षण।
5. बागवानी सरल गृहकार्य एवं सरल सामुदायिक श्रम प्रयासों को शामिल करते हुए शारीरिक श्रम और खेल।

6. उंगलियों की प्रवीणता एवं औजारों के उपयोग वाले हस्तकार्य एवं कार्यकलाप।
7. गीत, संगीत, नृत्य, डन्नइंग और चित्रकला जैसे कार्यकलाप।
8. भाषा, ज्ञान सहित आधिगम क्रियाएं। व्यक्तिक स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के नियम भौतिक वनस्पति एवं पशु जगत से सम्पर्क रखने वाला प्रारम्भिक प्राकृतिक अध्ययन और गिनती आदि।

निष्कर्ष :

उपरोक्त प्रस्तावित कार्यकम के लागू होने के बावजूद भी निजी विद्यालयों में पाठ्यक्रम नौ–नौ विषयों का चलाया जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप छात्रों का विकास होने के बजाय दिन–ब–दिन छात्र अपने वजन से ज्यादा बस्ते ढोकर बीमारी के शिकार हो रहे है। अतः हमें अपने बच्चों को उनका बचपन लौटाना चाहिए और जहां तक हो सके पुरानी परम्पराओं के अनुसार अपने बिषयों का सरलीकरण कर सिखाना चाहिए। इस दिशा में हमारे शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों का भी ठोस कदम उठाना चाहिए, जिससे हम अपना अतीत और वर्तमान सुरक्षित तरीके से अंगली पीढ़ी को पहुचा सके। यदि हमने अपने बच्चों की शिक्षा व्यवस्था पर ठीक तरह से ध्यान उनकी शारीरिक स्थिति के अनुसार दिया तो उसका स्वस्थ्य विकास भी हो सकेगा।

संदर्भ सूची :

1. पाठक, पी.डी. एवं त्यागी, गुरूसरनदास : भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, अग्रवाल पब्लिकेशन।
2. कोठारी कमीशन रिपोर्ट, पेज नं. 150
3. मुकर्जी व अरोड : पूर्वोत्तर पुस्तक, पृष्ठ 30
4. शर्मा आर.के. : 'उदीय भारतीय समाज में शिक्षक'।
5. मदान पूनम :'उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक की भूमिका', अगवाल पब्लिकेशन।
6. मुकर्जी व अरोड़ा : पूर्वोत्तर पुस्तक, पृष्ठ 26.
7. साहित्य परिचय : शैक्षिक प्रगति विशेषांक 1976, पृष्ठ 255–256.
8. साहित्य परिचय : शिक्षा समस्या विशेषांक 1969, पृष्ठ 158.
9. मुकर्जी एस.एस. : एजूकेशन इन इंडिया टूडे एण्ड टुमारो, पृष्ठ 105.